Report
on
Special Lecture by Dr. Vipin Kadavat
Under the Certificate Course Film and Culture

On **8th January 2024** Dr. Vipin Kadavat from Department of English. BHU, Varanasi delivered a talk on the subject, "Film and Culture" organized by the Department of English, DAV PG College, Varanasi under the Value-added course started by the department. Dr Kadavat speaking on the subject observed that cinema and culture are subservient to each other. The culture is propagated and transmitted through films. The movies propose to be the voice of the voiceless people living on the margins of the society. Culture is ever changing and dynamic process, it is exhibited through films. Movies bring emotional agitation among viewers which help bring necessary changes in life, thereby it exerts tremendous effect on society. It's like a reflection of the cultural exchanges taking place in a society. In Indian cinema there are plots that are subject based, imagination based and psychology based. Sometimes realistic movies are also made covering significant

aspects of day to day life and it's problems. The programme was conducted by Mr. Saket Mishra, the welcome was given by Dr. Indrajeet Mishra, and the subject was established by Dr. Mahima Singh. On this occasion faculty members of department Dr. Sangeeta Jain, Dr Bandana Bal Chandani and Dr Najmul Hasan were present.

Media Coverage:

6 वाराणसी

फिल्में समाज के प्रतिबिंब की तरह : डॉ. विपिन

वाराणसी। डीएवी पीजी कॉलेज के अंग्रेजी विभाग के तत्वावधान में मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम के अंतर्गत संचालित फिल्म एवं कल्चर कोर्स द्वारा बुधवार को विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सहायक प्रो. विपिन कुमार कदवत ने कहा कि वर्तमान समाज मे फिल्म और कल्चर एक दूसरे के पूरक है, फिल्मों के जरिये संस्कृति को संवर्धित एवं प्रचारित किया जाता है। इसका एक उद्देश्य समाज के वंचितों और शोषितों के लिए आवाज उठाना भी रहा है। संस्कृति एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है जिसे फिल्मों के जरिये उसे समाज के सामने लाया जाता है। डॉ. विपिन ने कहा की फिल्में मनुष्य के मनोभावों को उद्वेलित करती है, इसलिए उनका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है यह एक प्रतिबिंब की भाँति है। उन्होंने कहा कि भारतीय सिनेमा मे विषय प्रधान के साथ साथ कल्पना आधारित, मनोविज्ञान आधारित एवं सत्य घटनाओं पर आधारित फिल्मों का चलन ज्यादा रहा है। इसके पूर्व वक्ता का स्वागत विभागाध्यक्ष डॉ. इंद्रजीत मिश्रा ने किया। विषय स्थापना डॉ. महिमा सिंह ने किया। संचालन साकेत मिश्रा ने किया। इस मौके पर डॉ. संगीता जैन, डॉ. बंदना बालचंदनानी, डॉ. नजमूल हसन, सुश्री संस्कृति आदि सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

फिल्में समाज के प्रतिबिंब की तरह - डॉ. विपिन

वर्तमान समाज में फिल्म और कल्चर एक दूसरे के पूरक-प्रोफेसर विपिन कुमार

फिल्म-संस्कृति एक दूसरे के पूरक: प्रो. विपिन

वाराणसी (जनवार्ता)। डीएवी पीजी कॉलेज के अंग्रेजी विभाग के तत्वावधान में मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम के अंतर्गत संचालित फिल्म एवं कल्चर कोर्स द्वारा बुधवार को विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सहायक प्रो. विपिन कुमार कदवत ने कहा कि वर्तमान समाज मे फिल्म और कल्चर एक दूसरे के पूरक है, फिल्मों के जरिये संस्कृति को संवर्धित एवं प्रचारित किया जाता है। इसका एक उद्देश्य समाज के वंचितों और शोषितों के लिए आवाज उठाना भी रहा है। डॉ. विपिन ने कहा की फिल्में मनुष्य के मनोभावों को उद्वेलित करती है, इसलिए उनका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है यह एक प्रतिबिंब की भाँति है। स्वागत विभागाध्यक्ष डॉ. इंद्रजीत मिश्रा ने किया। विषय स्थापना डॉ. महिमा सिंह ने किया। संचालन साकेत मिश्रा ने किया। इस मौके पर डॉ. संगीता जैन, डॉ. बंदना बालचंदनानी, डॉ. नजमूल हसन, सुश्री संस्कृति आदि सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।